अर्स देखाया चढ़ उतर, हुआ मेयराज महंमद पर।
क्यों दुनी देखे दिल मजाजी, बिन खोले रूह नजर।। २२ ।।

रसूल मुहम्मद ने मेयराज में परमधाम के आने-जाने का रास्ता बताया। अब इस झूठे दिल वाले दुनियां के जीव आत्मदृष्टि के बिना कैसे समझें?

जेता अर्स दिल मोमिन, बिन मेयराज न काढ़ें बोल।
बिन पूछे देवें सब को, अर्स अजीम पट खोल।। २३ ।।

जिन मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श कहा है, वह अब श्री राजजी महाराज की वाणी से सबको बिना पूछे ही परमधाम की पहचान कराते हैं।

करने हैयात सबन को, देवें हक इलम बेसक।
सो पोहोंचे बका बीच भिस्त के, नूर नजर तले हक।। २४ ।।

सारे जगत को अखण्ड करने के लिए यह कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान दे रहे हैं। इस वाणी के द्वारा ही सब जीव अक्षर की नजर योगमाया की बहिश्तों में अखण्ड होंगे।

जो आया झण्डे तले महंमदी, सो तबहीं कायम होत।
देख्या सब हक दिल मता, हुई अर्स अजीम बीच जोत।। २५ ।।

श्री प्राणनाथजी के इस नूरी झण्डे के नीचे जो आ गया, उसे तुरन्त ही अखण्ड मुक्ति प्राप्त हो जाती है। उसे श्री राजजी महाराज के दिल की सारी बातों का अनुभव हो जाता है और परमधाम की पहचान हो जाती है।

अपनी सूरत देखी अर्स की, जो रूहें तले हक कदम।
जब सूर ऊग्या हक मारफत, तब सब आए तले हुकम।। २६ ।।

रूहें जो श्री राजजी महाराज के चरणों के तले मूल-मिलावा में बैठी हैं, उन्होंने अपनी परआतम को देख लिया। जब कुलजम सरूप की वाणी (मारफत का ज्ञान) सूर्य की तरह प्रकाशित हो गयी, तब सभी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के हुकम अनुसार चलने लगे।

महामत कहे ए मोमिनों, कही दो झण्डों की बिगत।
अब खोल देऊं फरदा रोज की, जो फुरमाई थी इसारत।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने दो झण्डों की हकीकत की पहचान कराई है। अब जो कुरान में फर्दा रोज का भेद लिखा है, उसे खोल देती हूं।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ७५२ ।।

बाब फरदा रोज का

फरदा रोज पेहेले कह्या, ए जो बखत कयामत।
एक दिन एक रात की, फजर है आखिरत।। १ ।।

कुरान में पहले से लिखा है कि कल के दिन कयामत होगी। जब एक दिन और एक रात बीते तो आखिरत की फजर हो जाएगी।

Nijanand App

साल हजार दुनीय के, गिनती चांद और सूर।
सो हक के एक दिन में, आवे नूर बिलंद से नूर।। २ ।।

दुनियां के हजार साल चन्द्रमा और सूर्य की गिनती से व्यतीत होते हैं, तो उस खुदा का एक दिन कहा है। तो उस समय परमधाम से ग्यारहवीं सदी में जागृत बुद्धि के ज्ञान की कुलजम सरूप की वाणी आएगी।

इन किल्ली रूहअल्ला अर्स के, पट खोल करे रोसन।
खोली हकीकत मारफत, किया अर्स बका हक दिन।। ३ ।।

श्री श्यामाजी महारानीजी तब तारतम ज्ञान की कुन्जी से परमधाम के पट हटाकर पहचान कराएंगे। हकीकत और मारफत के ज्ञान को खोलकर वह अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज की पहचान कराएंगे।

दिन रबका दसमी सदी लग, दुनियां के साल हजार।
मास हजार लैल के, तीसरे तकरार।। ४ ।।

खुदा का दिन दसवीं सदी या दुनियां के हजार साल तक चला। फिर लैल तुल कदर की रात्रि के तीसरे भाग में हजार महीने से भी अधिक की रात लिखी है।

कछू मास हजार से बेहेतर, ए जो कही लैलत कदर।
ए फरदा रोज कयामत, ए जो कही फजर।। ५ ।।

हजार महीने से कुछ अधिक, अर्थात् सौ साल की यह रात कही है। ग्यारहवीं सदी के बाद ही कल का दिन कयामत का होगा। जब फजर का ज्ञान आ जाएगा।

दसमी सदी भी हिसाब में, गिनती में आई।
इतथें सुरू हुई, रूहअल्ला की रोसनाई।। ६ ।।

इस तरह से दसवीं सदी गिनती में आई और उसके बाद ही श्री श्यामाजी महारानी का तारतम ज्ञान पसरना (फैलना) शुरू हुआ।

हजार मास जो लैल के, हुए सदी अग्यारहीं भर।
लिखी जो इसारतें, भई पूरी मिल बेहेतर।। ७ ।।

हजार महीने से अधिक जो रात कही है, वह ग्यारहवीं सदी है। यह बातें सब इशारतों में लिखी हैं। इन सबको मिलाकर अच्छी तरह बता दिया।

और आई सदी बारहीं, इनमें फजर भई।
लिख्या मुसाफ बीच आयतों, और हदीसों में कही।। ८ ।।

अब बारहवीं सदी १७४८ में आई, जिसमें मारफत का ज्ञान आने से सुबह हो गई। यह बात कुरान की आयतों में लिखी है और हदीस में भी कहा है।

असराफील गावे फुरकान, जाहेर करे निसान।
मगज मुसाफ के बातून, कर देवे पेहेचान।। ९ ।।

बारहवीं सदी में असराफील फरिश्ता, मारफत सागर की वाणी के द्वारा कुरान के छिपे रहस्यों को और कयामत के सब निशानों को जाहिर कर रहा है।

Nijanand App

खुलासा मुसाफ का, असराफील बतावे।
तब सूरज मारफत का, हक अर्स दिल नजरों आवे।। १० ।।

असराफील फरिश्ता कुरान के सब छिपे रहस्य को जब बताएगा, तब मोमिनों को, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श कहा है, कुलजम सरूप की वाणी से सब पहचान हो जाएगी।

तो हदीसें हक इलम की, भांत भांत करे बड़ाई।
बाब भिस्त जो हैयाती, सो याही कुंजी से खोल्या जाई।। ११ ।।

मुहम्मद साहब ने हदीस में कुलजम सरूप की वाणी की तरह-तरह से महिमा कही है। कुरान में जो बहिश्तों में कायम करने का प्रकरण है, वह इसी कुलजम सरूप की मारफत सागर की वाणी से समझ में आएगा।

हक इलम जो लदुन्नी, बका अर्स असल।
एही दानाई हक की, कही जो कुल्ल अकल।। १२ ।।

कुलजम सरूप की इस वाणी में पूर्ण ब्रह्म ने अपनी निज बुद्धि से अपने परमधाम का पूरा ज्ञान भर दिया है।

ठौर सबों के सब को, फरिस्ता बतावे।
पाक असराफील इन विध, कुरान को गावे।। १३ ।।

अब यह असराफील फरिश्ता कुलजम सरूप की वाणी को इस तरह से जाहिर करेगा कि सबको उनके अपने-अपने ठिकानों में पहुंचा देगा।

खासलखास रूहें उमत, गिरो फरिस्तों खास कहावे।
गिरो रूहों गिरो फरिस्ते, दोऊ अपने ठौर पोहोंचावे।। १४ ।।

खासलखास रूहें ब्रह्मसृष्टि हैं। खास रूहें ईश्वरीसृष्टि हैं। अब ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दोनों को अपने-अपने ठिकाने (परमधाम और अक्षरधाम) पहुंचाएगा।

एही सुंनत-जमात, महंमद बेसक दीन।
सकसुभे ना इनमें, जित असराफील अमीन।। १५ ।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में किसी तरह का संशय नहीं है। उनके मानने वाले सुन्नत जमात (सुन्दरसाथ) में किसी तरह का संशय नहीं रहता है, क्योंकि यहां जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील सिरदार (प्रधान) बनकर इमाम मेंहेंदी के तन में बैठा है।

ए जो सुंनत-जमात, होए सके न जुदे खिन।
ए गिरो फोड़ क्यों जुदे पड़ें, जिनों असल अर्स में तन।। १६ ।।

अब यह सुन्नत जमात सुन्दरसाथ है। यह श्री प्राणनाथजी महाराज से एक पल भी अलग नहीं हो सकते। जिनके असल तन परमधाम में हैं, वह अपनी जमात (सुन्दरसाथ) को छोड़कर अलग कैसे हो सकते हैं?

कई सरे अमल बीच रात के, चली जो सुभे सक।
सो फजर हक इलमें, बेसक करी खलक।। १७ ।।

अज्ञान के अंधेरे में कर्मकाण्ड पर आधारित पंथ, पैंडे चले थे। वह सभी संशय से भरे हुए थे। किसी को भी अखण्ड घर की पहचान नहीं थी। अब कुलजम सरूप की वाणी से सबके संशय मिट गए और ज्ञान का सवेरा हो गया।

Nijanand App

छे दिन की पैदास

पैदास कही छे दिन की, सो इन आलम का विस्तार।
दिन जुमां के बीच में, पाई साइत जो कही अपार।। १८ ।।

कुरान में जो छः दिन की पैदाइश का वर्णन लिखा है, वह सब इस सृष्टि के विस्तार का वर्णन है। छठे दिन जुम्मा का होगा, जिसमें परमधाम के मूल-मिलावा की साइत (पल) की सभी बातों की याद आएगी।

आए एक साइत लैलत कदर में, उसी साइत में दूजी बेर।
उसी साइत में तीसरे इन इंड, महंमद आए इत फेर।। १९ ।।

परमधाम के उसी पल में लैल तुल कदर में पहले बृज में आए। उसी पल में दूसरी बार रास में आए। उसी पल मे तीसरी बार रसूल मुहम्मद बनकर आए।

एक दिन कह्या रब का, दुनी के साल हजार।
इतथें आगे लैलत कदर, ए जो फजर तीसरा तकरार।। २० ।।

दुनियां के हजार साल के बराबर खुदा का एक दिन कहा है। इसके आगे लैल तुल कदर का तीसरा भाग चालू होता है, जिसमें ज्ञान का सवेरा होगा।

एक कौल में कहे तीन दिन, सो भी बीच साइत इन।
इन रोज रब कर ज्यारत, पोहोंचे अपने वतन।। २१ ।।

कुरान में एक जगह तीन दिन का बयान लिखा है। वह भी परमधाम के मूल-मिलावा के इसी पल की पहचान कराता है, जिसमें तीन दिन तीन लीला के बताएं हैं। तीसरी लीला के बाद मोमिन अपने घर वापस परमधाम जाएंगे।

और तीन दिन कहे रसूल लों, चौथे रूहअल्ला आए इत।
रोज पांचमें इमामें जमा किए, सो पाई जुमां बीच साइत।। २२ ।।

और छः दिन जो कहे हैं उनमें तीन दिन रसूल साहब तक होते हैं (बृज, रास और अरब)। चौथा दिन श्री श्यामाजी महारानी संसार में जाहिर हुए। पांचवें दिन इमाम मेंहेंदी प्राणनाथजी ने सारे धर्मग्रन्थों और कुरान से कुल गवाही इकट्ठी कर कुलजम सरूप के ज्ञान का नूरी झण्डा कायम किया। यह पांचवां दिन भी उसी साइत के अन्दर है।

छठे दिन मोमिन जमा हुए, तब गिरो आई सब कोए।
सो साइत जुमां बीच खोल के, इस्कें पोहोंचे पाक होए।। २३ ।।

छठे दिन में संसार में सब जगह फैले सुन्दरसाथ इकट्ठे हुए और कुलजम सरूप की वाणी से पाक (साफ) होकर धनी का इश्क लेकर परमधाम जाएंगे।

कहे तीन रोज तीन तकरार के, चौथे फरदा रोज फजर।
दे दीन दुनी सबों सलामती, पाक हुए खोल रूह नजर।। २४ ।।

एक जगह कुरान में तीन दिन को लैल तुल कदर के तीन तकरार कहा है। चौथे दिन ज्ञान का सवेरा होने पर कुलजम सरूप की वाणी से निर्मल होकर सब दुनियां को अखण्ड मुक्ति देकर अपने घर जाएंगे। यह भी परमधाम की उसी साइत में होना है।

Nijanand App

छे दिन कहे और कौल में, कह्या तिन का बेवरा ए।
हादी मोमिन कर सबों बका, अपने अर्स बका पोहोंचेंगे।। २५ ।।

कुरान में दूसरी जगह जो छः दिन बताए हैं, उसका यही विवरण है। छः दिन के बाद श्री प्राणनाथजो महाराज और मोमिन सबको अखण्ड बहिश्तों में कायम कर अपने घर जाएंगे।

ए रोज कहे बंदगीय के, आए पोहोंचे सावचेत होए।
ए दिन समझ रोजे रखे, कह्या तिन पर गुनाह न कोए।। २६ ।।

कुलजम सरूप की वाणी से जागृत होकर जो इस तरह अपने को समर्पित करेगा (रोजा रखेगा), उसके ऊपर कोई गुनाह नहीं लगेगा। इस तरह से यह छः रोज की बन्दगी लिखी है।

एही भूल फना दुनी की, डाले बीच निजस अल्ला कलाम।
तरफ न पावे जिनकी, कहे सो हम बका इसलाम।। २७ ।।

दुनियां वालों की सबसे बड़ी भूल यही है कि कुरान की इस वाणी को बातें (किस्से) कह देते हैं। इन्हें कुरान की वाणी की पहचान नहीं है और अखण्ड अर्श का दावा लिए बैठे हैं।

दुनी यों खेलाई हक ने, क्या करे बिना अखत्यार।
ए सब कछू हाथ कादर के, वही नचावनहार।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज ने दुनियां को इसी तरह नचा रखा है। दुनियां वालों को कुरान के भेद खोलने का अधिकार ही नहीं दिया। यह सब कुछ राजजी महाराज ने अपने हाथ में रखा है।

रात दिन फुरमाए हक ने, आप अपने हिसाब।
सो डाले बीच निजस, ए जो रात का ख्वाब।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज ने रात और दिन जो कहे हैं वह अपने हिसाब से, परन्तु यह संसार के जीव, सपने की सृष्टि बीते हुए किस्से बताते हैं।

छे रोज कहे एक कौल में, और तीन रात कौल एक।
ए हिसाब होए बीच फजर, हुए जाहेर साहेब नेक।। ३० ।।

कुरान में एक जगह छः दिन की लीला कही है और एक जगह रात में तीन लीला कही हैं। यह छः दिन और तीन रात के भेद जब इमाम मेंहेंदी प्रकट होकर ज्ञान से सवेरा करेंगे तब खुलेंगे।

कहे एक कौल में दोए दिन, बीच कही जो रात।
ए हिसाब दे सब फजर, सो कही कयामत बीच साइत।। ३१ ।।

एक जगह दो दिन और बीच में रात बताई है। एक बृज का, एक जागनी का यह दो दिन हुए। बीच में रास की रात्रि का वर्णन है। यह हिसाब फजर के वक्त मारफत सागर के ज्ञान आने से पता लगेगा। वैसे अव्वल से कयामत तक परमधाम के एक पल में उसी साइत में सब लीलाएं हुई हैं।

ए दिन देखो हक के, जो कहे हैं बातन।
कह्या हक अर्स दिल मोमिनों, देखो कलाम अल्ला रोसन।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज के इन दिनों की गिनती कुरान के बातूनी अर्थों से ही पता लगती हैं। कुरान में स्पष्ट कहा है कि मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं, इसलिए मोमिन ही इन बातों को समझेंगे।

Nijanand App

हकें काम लिया जो दिल में, सो जब हुआ पूरन।
मकसूद सबों हो रह्या, तब वाही फजर कह्या दिन।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो अपने दिल में विचार किया था, वह सब पूरे हुए। अब सबकी चाहना पूरी होने से इसे फजर का दिन कहा है।

जब थें आया रसूल हक का, तिन बीच हुए कई काम।
जहां जो पूरन हुआ, दिन सोई कह्या अल्ला कलाम।। ३४ ।।

जब से दुनियां में रसूल साहब पधारे, तब से बहुत से काम पूरे हुए। जो काम जहां पूरा हुआ, कुरान में उसे दिन कहा है।

जो बात निजस नाबूद, हक कलाम न कहे तिन में।
जो हक दोस्त गिरो मासूक, कहे हक कलाम तिन से।। ३५ ।।

झूठी दुनियां के जो धर्मग्रन्थ हैं उनमें श्री राजजी महाराज की वाणी नहीं है। मोमिन श्री राजजी महाराज के माशूक श्री श्यामाजी महारानी की जमात के तथा श्री राजजी के दोस्त कहलाते हैं। यह कुलजम सरूप की वाणी उनके वास्ते ही कही है।

कह्या हदीस कुदसीय में, जब बन्दा करे फिकर।
वह फिकर मुझसों रखे, हकें फुरमाया यों कर।। ३६ ।।

मुहम्मद साहब ने कुदसी हदीस में कहा है कि हक श्री राजजी महाराज कहते हैं कि जब मेरे दोस्त मोमिनों को चिन्ता सताए तो वह मेरा ध्यान करें, चिन्ता छोड़ दें। उनकी चिन्ता मैं दूर कर दूंगा।

कहे हदीस कुदसी, और आयतें हदीसें सूरत।
इन का रोजा निमाज हक दोस्ती, एक जरा न बिना मारफत।। ३७ ।।

हदीस कुदसी और कुरान की आयतों में लिखा है कि मोमिनों का रोजा और नमाज श्री राजजी महाराज की दोस्ती निभाना है। यह मोमिन श्री राजजी महाराज के मारफत के ज्ञान के बिना कुछ नहीं चाहते।

आंखें दई हकें इन को, और दिए कान अकल।
ज्यों दुनियां मुद्दा वजूद पर, त्यों कहे मोमिन साहेब दिल।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने मोमिनों को ही आंख, कान और अक्ल दी है। दुनियां की निगाहें संसार के शरीरों पर होती हैं और मोमिनों की निगाहें, कान और बुद्धि श्री राजजी महाराज के दिल की बातें जानने के वास्ते होती हैं।

जेते अंग हैं वजूद के, तेते अंग बातून दिल।
नजर खुली जब रूह की, हुआ दिल मोमिन अर्स असल।। ३९ ।।

संसार में मोमिनों के जितने वजूद अंग हैं, उतने ही अंग बातूनी परआतम के हैं। जब ज्ञान से रूह की नजर खुल जाती है, तो मामिनों का दिल ही श्री राजजी का अर्श बन जाता है।

हाथ पांउं बाहेर अंदर, सब अंगों हक नूर।
कहे इन विध मोमिन अर्स में, जिन का हक आप करें जहूर।। ४० ।।

हाथ, पांव, अन्दर और बाहर के सभी अंगों में श्री राजजी महाराज का नूरी स्वरूप समा जाता है। इस तरह से मोमिन का पूरा शरीर राजजी मय हो जाता है। जिस कारण से श्री राजजी महाराज स्वयं मोमिनों को जाहिर करते हैं।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, हादिएं खोल दिए दिन बातन।
कयामत दिन जाहेर कर, देखाया अर्स बका वतन।। ४१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुरान के सब बातूनी भेद खोल दिए हैं और कयामत के निशान जाहिर कर सबको अखण्ड परमधाम दिखा दिया है।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ७९३ ।।

बाब हादी गिरोकी पेहेचान

भाई महंमद के मोमिन, कोई था न उस बखत।
तो सरा चल्या तोरे बल, कह्या हम फेर आवसी आखिरत।। १ ।।

रसूल साहब जब दुनियां में आए, तो उस समय उनके भाई (मोमिन) संसार में नहीं उतरे थे, इसलिए उन्होंने भविष्य में आने का वायदा किया और अपनी राज सत्ता के बल पर शरीयत का धर्म चलाया।

मोमिन का दुनी मजाजी, उठाए न सके भार।
मारे उसी सिर्क से, तो कहे बीच नार।। २ ।।

दुनियां के झूठे दिल वाले मोमिनों की साहेबी का भार नहीं उठा सकते। उन्होंने मोमिनों का झूठा दावा लिया, तो इस झूठे अहंकार के कारण नीचा देखना पड़ा, इसलिए उनकी नारी (दोजखी) फिरकों में गिनती की गई।

तब रसूल खोलत जो माएने, हकीकत मारफत।
तो तबहीं होती फजर, जाहेर होती कयामत।। ३ ।।

रसूल साहब यदि उसी समय हकीकत और मारफत का ज्ञान दे देते, तो उसी समय सवेरा हो जाता और कयामत हो जाती।

आए सदी बीच आखिरी, जो रसूलें करी थी सरत।
बखत हुआ बीच बारहीं, भई फरदा रोज कयामत।। ४ ।।

रसूल साहब ने जैसा वायदा किया था, उसी के अनुसार ग्यारहवीं सदी में आए। कल के दिन कयामत होगी, जो कहा था, वह बारहवीं सदी का समय आ गया।

ए इसरातें हक मुसाफ की, पाइए खुले हकीकत मारफत।
ए हक इलमें पाइए मेहेर से, जो होए मूल निसबत।। ५ ।।

हकीकत और मारफत का ज्ञान मिलने पर ही कुरान की यह इशारतें समझ में आती हैं। श्री राजजी महाराज की मेहर से ही यह कुलजम सरूप की वाणी मिलती है जिससे मूल सम्बन्ध का पता चलता है।

ए अर्स गुझ बिना लदुन्नी, क्यों कर बूझ्या जाए।
हक खिलवत बातें गैब की, दें अर्स दिल मोमिन बताए।। ६ ।।

यह परमधाम की गुझ (गुप्त) बातें हैं जो कुलजम सरूप की वाणी के बिना कैसे समझी जाएं? परमधाम में मूल-मिलावा की और श्री राजजी महाराज की गुझ (गुप्त) बातों को मोमिन ही बताएंगे, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज अर्श कर बैठे हैं।

Nijanand App